राजस्थानी लोकगीतों में बसती है रिश्तों की महक

-कमला बोड़ा

लोक गीतों में ऊष्मा होती है, क्योंकि उनमें स्थानीय परिवेश झलकता है। उनमें सामान्य लोगों की भावनाएं अभिव्यक्त होती हैं। ये समकालीन जीवन का यथार्थ प्रस्तुत करते हैं। इनमें भावनाओं की अभिव्यक्तियां बड़े शास्त्रीय अलंकरणों वाली तो नहीं होती परंतु वे खेत–खलिहान और हाथ के दूसरे कौशल करने वाले खुरदरे हाथों की भांति प्रमाणित होती हैं। उनमें बालकों के चेहरों सी मासूमियत होती है।

आम जीवन को कठिन बनाती यहां की भौगोलिक परिवेश राजस्थानी गीतों को उनकी विशिष्ठता देता है। जिस प्रकार सूखे बियाबानों में कोपलें फूट पड़ती है वैसे ही इंसानी बस्तियों में उत्सव मनते हैं जिनमें लोकगीत सर्वजन की भावनाओं को से सबको भिगो देते हैं। इसलिए लोक गीतों में नदी, तालाब, बावड़ी, पहाड़, गढ़, हवेली का जिक्र आता है तो खेत खलिहानों, फसलों, पेड़–पौधों–लताओं के साथ–साथ पशु पक्षियों और वन्य जीवों की बातें भी आती हैं। बहु–प्रचलित लोकगीत गीत में यह बताते हुए कि तालाब किसने खुदवाया है, कितने रिश्तों की बात नायिका करती है। परिवेश की जब इतनी बातें हों तो लोक गीतों में इंसानी रिश्ते क्यों नहीं आएंगे।

राजस्थान के लोक गीतों में पति–पत्नी का एक दूसरे के प्रति कोमलतम और स्नेहपूर्ण व्यवहार और निष्ठा के साथ विवाह संबंध की पवित्रता को हम महसूस कर सकते हैं। इन गीतों में आपसी प्रेम, चुहल और विरह का वर्णन आता है तो घर की जिम्मेवारियां निभाने की प्रतिबद्धता और उसकी सीख भी मिलती है।

राजस्थानी लोक गीतों में विस्तृत परिवार के सभी रिश्तों की गर्माहट भी महसूस की जा सकती है। इनमें